

महाभारत का आधुनिक पुनराख्यान: 'महासमर' में अभिव्यक्त समकालीन सामाजिक चेतना

सुश्री पार्वती बारिक ¹, डॉ. स्नेहलता दास ²

¹ शोध छात्रा, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत

² हिन्दी विभाग, विभागाध्यक्षा, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, ओडिशा, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख आधुनिक हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य रचनाकार नरेंद्र कोहली के बहुचर्चित महा-उपन्यास 'महासमर' में अंतर्निहित सामाजिक चेतना का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। पौराणिक कथा-आख्यानों को आधुनिक युगीन संदर्भों, मानवीय मूल्यों और सामाजिक समस्याओं से जोड़कर पुनःसृजित करना कोहली जी की औपन्यासिक कला का मुख्य केंद्र रहा है। यह आलेख यह विश्लेषित करता है कि किस प्रकार 'महासमर' मात्र अतीत का गान न होकर वर्तमान समाज की विसंगतियों—जैसे वर्ग-शोषण, वर्ण-व्यवस्था की सीमाएं, विवाह संस्था का द्वंद्व, नारी का बहुस्तरीय उत्पीड़न, पारिवारिक विघटन, वृद्ध विमर्श एवं पर्यावरणीय असंतुलन का समाधान खोजने का एक सशक्त अकादमिक उपक्रम है।

मूल शब्द: महासमर, नरेंद्र कोहली, महाभारत, सामाजिक चेतना, पुनराख्यान, वर्ण-व्यवस्था, नारी विमर्श, पर्यावरण संरक्षण।

साहित्य और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित है। साहित्य न केवल सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंबन करता है, बल्कि वह समाज को चेतना प्रदान कर उसके परिवर्तन की दिशा भी निर्धारित करता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में पौराणिक आख्यानों एवं ऐतिहासिक चरित्रों को आधुनिक जीवन-दृष्टि से जोड़ने की एक दीर्घ परंपरा रही है। इस परंपरा को महाकाव्यात्मक औपन्यासिक आयाम देने का ऐतिहासिक श्रेय डॉ. नरेंद्र कोहली को जाता है। कोहली जी का नव-खंडीय एवं लगभग चार हजार पृष्ठों में विस्तृत महा-उपन्यास 'महासमर' हिन्दी साहित्य की एक युगधात्री रचना है। पंद्रह वर्षों के दीर्घ साधना-काल में रचे गए इस महाग्रंथ में रचनाकार ने 'महाभारत' की पौराणिक कथाभूमि का आश्रय लेकर आधुनिक समाज की बुनियादी समस्याओं एवं चेतना को बड़े ही दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक ढंग से विश्लेषित किया है। 'महासमर' में प्राचीन पात्र अपने युग की सीमाओं से बाहर निकलकर समकालीन मनुष्य के मानसिक एवं सामाजिक अंतर्द्वंद्वों का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हैं।

आधुनिक शासन प्रणालियों में व्याप्त भ्रष्टाचार और संस्थागत शोषण की जड़ें अतीत की सामाजिक संरचनाओं में भी विद्यमान रही हैं। 'महासमर' में वारणावत गमन के प्रसंग में जब युधिष्ठिर साधारण प्रजा द्वारा लाए गए उपहारों को अस्वीकार करते हैं, तो प्रजा में आश्चर्य का भाव पैदा होता है। एक ग्रामीण की यह टिप्पणी तत्कालीन एवं वर्तमान व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है— "उन्हें प्रसन्न करने के लिए युवराज! हमें उनसे कोई-न-कोई काम पड़ता ही रहता है। यदि हम उन्हें प्रसन्न नहीं रखेंगे, तो वे हमारा काम क्यों करेंगे?"

यहाँ लेखक यह स्थापित करता है कि जहाँ रक्षक ही शोषक बन जाएँ और बिना 'उपहार' (रिश्वत) के नागरिक अधिकार बाधित हों, वहाँ समाज में विषमता का बढ़ना स्वाभाविक है। कोहली जी ने महाभारत के माध्यम से आधुनिक नौकरशाही और आम जनमानस के बीच व्याप्त शोषित-शोषक संबंध को रेखांकित किया है।

'महासमर' में द्रोणाचार्य और एकलव्य का प्रसंग जातिगत एवं वर्गगत वर्चस्ववादी मानसिकता का जीवंत उदाहरण है। द्रोण द्वारा एकलव्य को भील (आदिवासी/निम्न वर्ण) होने के कारण शस्त्र-विद्या से वंचित करना और तत्पश्चात् गुरुदक्षिणा के रूप में उसके अंगूठे का त्याग माँगना, श्रेष्ठता के एकाधिकार को बनाए रखने की कुत्सित चेतना को उजागर करता है। लेखक यहाँ यह

स्पष्ट करता है कि समाज के पथ-दर्शक (गुरु) जब स्वयं वर्ण-भेद और वर्ग-स्वार्थ से ग्रस्त हो जाते हैं, तब प्रतिभा का दमन संस्थागत रूप ले लेता है। यह प्रसंग आधुनिक युग की सामाजिक गैर-बराबरी और अवसर की असमानता का प्रबल आख्यान बन जाता है।

पारंपरिक सामाजिक ढाँचे में विवाह को प्रायः जाति, कुल, वंश और धर्म के कठोर नियमों में बाँधकर देखा जाता रहा है। 'महासमर' में भीम और हिडिम्बा के विवाह प्रसंग के माध्यम से कोहली जी ने विवाह संस्था के रूढ़िवादी नियमों पर गंभीर प्रश्न उठाए हैं। जब पांडव और कुंती जातिगत आधार पर हिडिम्बा को अस्वीकार करते हैं, तब हिडिम्बा का प्रतिप्रश्न आधुनिक नारीवादी चेतना का प्रतिनिधित्व करता है— "पता नहीं तुम मनुष्यों ने अपने विवाह के लिए कैसे-कैसे नियम बना रखे हैं! तुम इसे स्त्री और पुरुष की प्राकृतिक आवश्यकता क्यों नहीं समझ सकते? तुम मुझे ग्रहण नहीं करोगे तो मुझे कितनी पीड़ा होगी उसके विषय में क्यों नहीं सोचते?" आगे वह पारिवारिक और सामाजिक हस्तक्षेप को नकारते हुए कहती है— "विवाह तो स्त्री-पुरुष का परस्पर सम्बंध है; इसमें किसी और का तो कोई काम ही नहीं है।"

हिडिम्बा का यह वक्तव्य विवाह को सामाजिक/जातिगत समझौते के स्थान पर दो व्यक्तियों की व्यक्तिगत स्वायत्तता और नैसर्गिक इच्छा के रूप में पुनार्याख्यित करता है। जैसे— नारी का बहुस्तरीय (सामाजिक एवं शारीरिक) उत्पीड़न: कोहली जी का साहित्य सदैव नारी-मुक्ति और उनके अधिकारों का सशक्त पैरोकार रहा है। 'महासमर' यह दर्शाता है कि नारी का शोषण केवल निम्न या मध्यम वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि राजप्रासादों की उच्चवर्गीय स्त्रियाँ भी इसकी शिकार रही हैं।

सामाजिक एवं आर्थिक शोषण: पति की मृत्यु के पश्चात् विधवा स्त्री और उसके बच्चों को अधिकारों से वंचित करना समाज की पितृसत्तात्मक क्रूरता है। पांडु की मृत्यु के बाद कुंती और पांडवों को हस्तिनापुर के अधिकार से वंचित रखने का धृतराष्ट्र का षड्यंत्र और भीष्म-द्रोण जैसे धर्मध्वजियों की मौन सहमति इसका प्रमाण है। 'कर्म' खंड में कुंती के निष्कासन की व्यथा को व्यक्त करते हुए लिखा गया है कि उसने अश्रुपूर्ण आँखों से हस्तिनापुर के राजप्रासाद को देखा, जहाँ से उसे पुनः निर्वासित किया जा रहा था।

शारीरिक एवं मानसिक उत्पीड़न: द्यूतसभा में द्रौपदी का वस्त्राहरण और कर्ण द्वारा उसे 'वेश्या' संबोधित किया जाना

समकालीन यौन-उत्पीड़न (Sexual Harassment) और सार्वजनिक स्थानों पर स्त्री की गरिमा के हनन की घटनाओं की भयानक पुनरावृत्ति है। धर्मराज युधिष्ठिर की विवशता और सभासदों की अकर्मण्यता यह सिद्ध करती है कि पुरुष-प्रधान व्यवस्था में नियम-कानून बहुधा स्त्री के पक्ष में खड़े होने में विफल रहते हैं। पारिवारिक विघटन एवं मानवीय संबंधों में अजनबीपन: आधुनिक समाज की एक प्रमुख विडंबना 'पारिवारिक विघटन' और एकाकीपन है। 'महासमर' में देवव्रत (भीष्म) का चरित्र इस संदर्भ में अत्यंत सूक्ष्मता से उकेरा गया है। बाल्यकाल में अपने माता-पिता (शांतनु और गंगा) के दांपत्य जीवन के बिखराव और गृह-कलह को देखकर देवव्रत के मन में गृहस्थ जीवन के प्रति पूर्ण विरक्ति उत्पन्न हो जाती है। पिता द्वारा पुत्र का परित्याग और पारिवारिक वैमनस्य युवा पीढ़ी में अलगाव की भावना को जन्म देता है, जो अंततः संपूर्ण वंश के विनाश का कारण बनता है।

वृद्ध विमर्श: उपेक्षा एवं एकाकीपन की पीड़ा: आधुनिक समाज में वृद्धजनों की उपेक्षा एक गंभीर सामाजिक समस्या बनकर उभरी है। 'महासमर' में धृतराष्ट्र का मानसिक द्वंद्व इसी पीढ़ियों के अंतराल और उपेक्षा भाव को दर्शाता है। धृतराष्ट्र चिंतन करते हैं कि पांडुपुत्र तो प्रतिदिन आकर उनके चरणों में प्रणाम करते थे, किंतु उनका अपना पुत्र दुर्योधन उन्हें केवल भौतिक सुविधाओं और दासी-सेवकों के भरोसे छोड़कर विस्मृत कर चुका है। लेखक यहाँ यह प्रतिपादित करता है कि वृद्धों को केवल भोजन और आश्रय नहीं, बल्कि आत्मीयता, सम्मान और संवाद की आवश्यकता होती है।

पर्यावरण चेतना एवं प्राकृतिक संतुलन 'महासमर' की सबसे बड़ी नवीनता इसकी अधुनातन पारिस्थितिकीय चेतना है। जैसे—

अस्त्र-परीक्षण और प्राकृतिक विनाश: जब अर्जुन दिव्यास्त्रों का परीक्षण करते हैं, तब नारद मुनि आकर उन्हें रोकते हुए परामर्श देते हैं कि "तुम्हारे इन दिव्यास्त्रों के परीक्षण से यहाँ की प्रकृति नष्ट होगी। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ेगा। असंख्य जीव-जंतु व्यर्थ ही मारे जाएँगे... इनका प्रयोग केवल अति-विषम परिस्थितियों में ही अनुमत है।"

वन संरक्षण: खांडव वन के पुनरुद्धार के संदर्भ में युधिष्ठिर का कथन आधुनिक पर्यावरण संरक्षण सिद्धांतों का आधार है कि "नगर के निकट वन रहेगा तो वायुमंडल शुद्ध रहेगा। वर्षा अच्छी होगी। पशुओं के लिए गोचर भूमि तथा वनस्पति की सुविधा रहेगी। हमें खांडव वन को नष्ट करने का कोई लाभ नहीं है।" यहाँ नरेंद्र कोहली पांडवों के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि मानव को अपने क्षणिक स्वार्थों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नहीं करना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन से यह संपुष्ट होता है कि नरेंद्र कोहली कृत 'महासमर' मात्र प्राचीन कथा का पिष्टपेषण या पौराणिक आख्यान का दोहराव नहीं है, अपितु यह आधुनिक समकालीन समाज का एक जीवंत, प्रासंगिक एवं वैचारिक दस्तावेज है। लेखक ने महाभारत के पौराणिक चरित्रों को आधुनिक धरातल पर उतारकर समाज, दर्शन, राजनीति, नारी-मुक्ति, वृद्ध विमर्श और पर्यावरण संरक्षण जैसे बहुआयामी विषयों पर अत्यंत गंभीर अकादमिक विमर्श उपस्थित किया है। निष्कर्षतः, आधुनिक हिन्दी औपन्यासिक साहित्य में सामाजिक चेतना के प्रकटीकरण की दृष्टि से 'महासमर' एक युगप्रवर्तक एवं कालजयी रचना सिद्ध होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोहली, नरेंद्र. (१९८८). महासमर (खंड २: 'दीक्षा'). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. १२४.
2. कोहली, नरेंद्र. (१९९०). महासमर (खंड ३: 'दत्त'). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. १६८.

3. कोहली, नरेंद्र. (१९९१). महासमर (खंड ४: 'कर्म'). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. ५६.
4. कोहली, नरेंद्र. (१९९५). महासमर (खंड ६: 'प्रच्छन्न'). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. ३१०.
5. कोहली, नरेंद्र. (१९९६). महासमर (खंड ७: 'प्रत्यक्ष'). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. १४५.
6. कोहली, नरेंद्र, महासमर – १, वाणी प्रकाशन
7. कोहली, नरेंद्र, महासमर – २, वाणी प्रकाशन
8. कोहली, नरेंद्र, महासमर – ३, वाणी प्रकाशन
9. कोहली, नरेंद्र, महासमर – ४, वाणी प्रकाशन
10. कोहली, नरेंद्र, महासमर – ५, वाणी प्रकाशन
11. कोहली, नरेंद्र, महासमर – ६, वाणी प्रकाशन
12. कोहली, नरेंद्र, महासमर – ७, वाणी प्रकाशन
13. कोहली, नरेंद्र, महासमर – ८, वाणी प्रकाशन
14. कोहली, नरेंद्र, महासमर – ९, वाणी प्रकाशन
15. व्यासाचार्य. श्रीमन्महाभारतम् (मूल संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद). गोरखपुर: गीताप्रेस.
16. डॉ. रामविलास शर्मा. प्रतिबद्धता और साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
17. डॉ. मैनेजर पांडेय. साहित्य और समाजशास्त्र की भूमिका. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
18. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल. नरेंद्र कोहली का कथा-साहित्य. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.